मानव व्यवहार की प्रकृति, उद्‌गम और विकास
(The Nature origin and Development of Human Behaviour)

1) आनुवांशिकता तथा पर्यावरण
2) सांस्कृतिक कारा
3) व्यवहार समाजिक की प्रक्रिया
4) राष्ट्रीय चरित्र की संकल्पना।

- आनुवांशिकता तथा पर्यावरण– मनुष्य का व्यहार दो प्रकार का होता है– क्रियात्मक और प्रतिक्रियात्मक व्यवहार। जो व्यक्ति द्वंद्वों से मुक्त रहता है, उसका व्यवहार क्रियात्मक रहता है।
- व्यवहार मनोविज्ञान या व्यवहारवाद एक सिद्धांत है जो बताता है कि पर्यावरण मानव व्यवहार को आकार देता है।
- वास्तव में व्यवहार मनोविज्ञान अवलोकन योग्य व्यवहार का अध्ययन और विश्लेषण है।
- वडवर्थ के अनुसार विकास आनुवांशिकता और पर्यावरण दोनों का निर्भर करता है। विकास आनुवांशिकता और पर्यावरण का एक उत्पाद है। उदाहरण के लिए वंशानुक्रम के कारण बच्चे की आँख का रंग, बाल उनके माता–पिता के समान होते है।
- आनुवांशिकता की अभिप्राय उस आनुवांशिक संरचना से है जो हमें अपने–माता–पिता से विरासत में मिलती है, जबकि पर्यावरण में वे सभी बाहरी कारक शामिल होते है, जो हमारे विकास को प्रभावित करते हैं।

CAREER FOUNDATION

❖ आनुवांशिकता का स्वरूपः–

1. आनुवांशिक गुणों के एक पीढ़ी से दुसरी पीढ़ी में संचरित होने की प्रक्रिया को आनुवांशिकता या वंशानुक्रम (**Genetics**) कहा जाता है।
2. आनुवांशिकता को स्थिर सामाजिक संरचना माना जाता है।
3. आनुवांशिकता का मूलाधार कोष (**Cell**) होता है।

4. कोषों के केन्द्रक (न्यूक्लियस) के कणों को गुणसूत्र या क्रोमोजोंस कहा जाता है।
5. मानव कोष में 46 गुणसूत्र होते है, जो 23 गुग्मों में व्यवस्थित होते हैं।
6. प्रत्येक युग्म में से एक माँ और दूसरा पिता से आता है।

- मांटेग्यू और शीलड केण्ड के अनुसार प्रत्येक गुणसूत्र में 3000 जीन्स पाए जाते है। ये जींस पाए जाते हैं। ये जींस ही व्यक्ति की विभिन्न योग्यताओं एवं गुणों के निर्धारक होते हैं।

❖ आनुवांशिकता का प्रभाव–

1. बालक का रंग–रूप आकार, शारीरिक गढ़न, ऊँचाई आदि के निर्धारण में।
2. कई रोग–हिमोफोलिया, अस्थमा, आदि को आनुवांशिक रोग माना जाता है।
3. बच्चे का प्रतिभाशाली अथवा मंद–बुद्धिहोना।

■ आनुवांशिकता की प्रमुख परिभाषाएँ–

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

1. जेम्स ड्रेवर– शारीरिक तथा मानसिक विशेषतओं का माता–पिता से संतानों में हस्तानतरण होना आनुवांशिकता है।
2. पिटरसन व वुडवर्थ– व्यक्ति अपने माता–पिता के माध्यम से पूर्वजों की जो लक्षण प्राप्त करता है, उसे वंशक्रम कहते हैं।

❖ पर्यावरण / वातावरण

1. गर्भावस्था से लेकर जीवनपर्यन्त तक अनेक प्रकार की घटनाएँ व्यक्तित्व एवं उनके विकास को पर्यावरण प्रभावित करती है।
2. मनुष्य के विकास पर जलवायु का प्रभाव पड़ता है।
3. सामाजिक व्यवस्था, रीति–रिवाज, प्रारस्परिक अंतः क्रिया आदि सामाजिक वातावरण भी व्यक्ति के व्यावहार को प्रभावित करता है।
4. सीएटल के अनुसार–पृथ्वी हमारी नहीं, हम पृथ्वी के है।
5. शुमेकर की रचना– **Small is beautiful** यही अर्थ देता है।
6. आइंस्टिन – "पर्यावरण वह हर चीज है, जो में नहीं हूँ।"

■ मानव–व्यवहार और सांस्कृतिक कारक–

1. संस्कृति सीखे हुए व्यवहार स्वरूप को एक ऐसा समुच्चम होता है जो ज्ञान के अंतर पीढ़ी हस्तारण के माध्यम से सीखा गया होता है। यह व्यवहार लोगों के एक खास समूह द्वारा प्रकट किया जाता है।
2. यह जातीयता, परंपराओं, परिधान–शैली कला–साहित्य, भाषा, धर्म, संगीत आदि के संदर्भ में एक सामूहिक व्यवहार होता है।
3. संस्कृति गतिशील होती है।

↳ मानव व्यवहार के सांस्कृतिक कारक

1. जातीयाता और लालन–पालन
2. पंरपरा और रिवाज
3. त्यौहार और पहनावा
4. कला और साहित्य
5. भोजन और पाक–कला
6. भाषा और बोलियाँ
7. धर्म और प्रथाएँ
8. संगीत।

(1) जातीयता और लालन–पालन–जातीयता एक व्यापक शब्द है। यह धर्म राष्ट्रीयता, वंश, भाषा, सांस्कृतिक विरासत आदि जैसे सांस्कृतिक कारकों को अपनी परिभाषा में समाहित परंपराओं का पालन करते हैं। बच्चों का लालन–पालन सांस्कृतिक आचरण पर निर्भर करता है। यही जातीय संस्कृति व्यक्ति के व्याहार को प्रभावित करता है।

(2) पंरपरा और रिवाजः– परंपाराएँ सांस्कृतिक प्रभाओं का चलन है। रिवाज प्रथाओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित करता है। इसमें पहनावा, आचरण आदि सभी शामिल होते हैं। बच्चे का व्यवहार विभिन्न परंपराओं और रिवाजो की अंतः क्रिया का परिणाम है।

(3) पर्व–त्यौहार और पहनावा– यह संस्कृति की प्रत्यक्ष व भौतिक अभिव्यक्ति है। पर्व व त्यौहार के माध्यम से व्यक्ति के व्यवहार में उसकी सांस्कृतिक पहचान झलकती है। सामुहिक उत्सव, नृत्य, विभिन्न पोशाक व्यक्ति के व्यवहार को परिलक्षित होता है।

भारत की सांस्कृतिक पहचान विविधता में एकता पर्व–त्यौहारो के समय प्रकट होता है।

(4) कला व साहित्य– ये दोनों संस्कृति का दर्पण माना जाता है। इसके माध्यम से व्यवहार की रचनात्मकता, सुंन्दरता और मनोरंजन संबंधी लक्षणों को समझा जा सकता है। कला व साहित्य भावी पीढ़ियों को अनुप्रेरित करती है।

(5) भोजन व पाककला– भोजन न केवल भौगोलिक रूप से बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक पहलूओं को भी उजागर करता है। यह रीति–रिवाजों और परंपराओं का भंडार होता है।

(6) भाषा व बोलियाँ– भाषा व बोलियाँ व्यक्ति के व्यवहार को सांस्कृतिक रूप में प्रकट करता है।

(7) धर्म व प्रथाएँ– व्यक्ति के व्यवहार, आचरण में धर्म व प्रथाओं की भूमिका स्पष्ट देखी जा सकती है।

(8) संगीत– संगीत भी साहित्य व कला की भांति व्यक्ति के व्यवहार को प्रकट करती है।

3) राष्ट्रीय चरित्र की संकल्पना–

- राष्ट्रीय चरित्र की संकल्पना का अध्ययन द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान और उसके तुरंत बाद किए गए मानव शास्त्रीय अध्ययनों का एक समूह है। इसमें विशिष्ट, अदम्य सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुसार लोगों की जातीयता और नस्लों की पहचान शामिल है।
- सामाजिक डार्विनवाद के अनुसार एक पराजित राष्ट्र या निर्धन राष्ट्रों के लोगों को स्थिर माना जाता है।
- विकासशील राष्ट्रों को विकसित राष्ट्रों द्वारा दी जाने वाली आर्थिक सहायता का वर्णन सामाजिक डार्विनवाद के परिपेक्ष्य में लुड़वीग रूडेल, विचारों से स्पष्ट है।
- संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा प्रारंभ मार्शल योजना और ड्रमैन सिद्धान्त इसी का उदाहरण है।
- राष्ट्रीय चरित्र पर एक प्रमुख कार्य रूथ वेनडिक्ट की पुस्तक **Pattert of culture** (1934) में दिखाई देता है।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 में राष्ट्रीय चरिचत्र के निर्माण को शिक्षा का मूल उद्देश्य माना गया है।

➢ पूर्व राष्ट्रपति डा॰ शंकर दयाल शर्मा के अनुसार–किसी शिक्षित चरित्रहीन व्यक्ति की अपेक्षा एक अशिक्षित चरित्रवान व्यक्ति समाज के लिए अधिक उपयोगी होता है।

➢ राष्ट्रीय चरित्र अध्ययन के प्रबल समर्थन मार्गरेट मीड के विचारों में मिलता है। उनके अनुसार राष्ट्रीय चरित्र, सबसे पहले किसी राष्ट्र या संस्कृति के भीतर बच्चें के लिए सामान्य बुनियादी शिक्षा और बाद में उसी समाज के भीतर विशेषताओं के बीच संबंधों का विश्लेषण होता है।

4) व्यवहार समाजीकरण की प्रक्रिया –

- **Meaning-** सामाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज के विभिन्न व्यवहार रीति–रिवाज इत्यादि ग्रहण करता है। जैविक अस्तित्व से समाजिक अस्तित्व में मनुष्य का रूपांतरण भी सामाजिकरण के माध्यम से ही होता है। सामाजिकरण के माध्यम से ही हम संसकृति को आत्मसात करते है।

❖ सामाजीकरण के दो रूप–

1. प्राथमिक सामाजिकरण – यह वह प्रक्रिया है जिससे लोग किसी विशेष संस्कृति के सदस्यों के रूप में व्यक्तियों के लिए दृष्टिकोण, मल्यों और कार्यों को खीखते हैं।
2. विकासत्मक सामाजिकरण – यह एक सामाजिक संस्था में व्यवहार सीखने या सामाजिक कौशल विकसित करने का प्रक्रिया है।

↳ प्राथमिक सामाजिकरण के सिद्धांत में योगदान देने वाले विद्वान–

i) सिगमण्ड फ्रॉयड
ii) जार्ज हर्बर्ट मील
iii) चार्ल्स कुली
iv) जीन पिगट
v) टालकट पार्सन्स।

इनमें टॉलकट पार्सन्स का सामाजी करूण और सांानात्मक विकास में संबंध महत्वपूर्ण योगदान है।

➢ महत्व–सामाजिकरण समाजों और संस्कृतियों को बनाए रखने में मदद करता है। यह व्यक्तिगत विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह समाज के

सदस्यों को निरंतर बदलने परिवेश के अनुकूल बनाने के लिए तैयार करता है।

❖ परिभाषाएँ–

↳ किम्बल यंग–सामाजीकरण का अभिप्राय उस प्रक्रिया से है, जिससे व्यक्ति सामाजिक एवं सांस्कृतिक समाज में प्रवेश करता है और वह समाज का और उसके विभिन्न समूहों का सदस्य बन जाता है।

↳ जॉनसन– सामाजिकरण वह शिक्षण है, जो सीखने वाले को सामाजिक कार्य हेतु योग्य बनाता है।

↳ किंग्सले डेविस– सामाजिकरण का अर्थ उस प्रक्रिया से है जिसमें कि एक व्यक्ति को सामाजिक व्यक्ति या समाजीकृत बनाया जाता है।

• सामाजिकरण की प्रक्रिया का कारक–

1. पालन–पोषन – समाजिकरण का प्रथम चरण
2. सहानुभूति–बच्चों से प्रेम व अपनत्व की भावना का विकास
3. सामाजिक प्रशिक्षण–समाज के मूल्यों, आदर्शों, मान्यताओं के अनुरूप व्यवहार करना।
4. अनुकरण
5. आत्मीकरण
6. परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण
7. निर्देश
8. सहयोग
9. पारस्परिक व्यवहार।

CAREER FOUNDATION